478वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | एकादश अंक | जून 2018

इस अंक में...

12 परमार्थ
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
22 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
35 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
40 नवीनतम सामान्य ज्ञान
47 21 वें राष्ट्रमण्डल खेल आस्ट्रेलिया में गोल्ड कोस्ट सिटी में सम्पन्न: भारत का पदक तालिका में तीसरा स्थान
53 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
60 फोकस—भारत में लोकतन्त्र : कितना सफल ?
63 स्मरणीय तथ्य
66 विश्व परिदृश्य
72 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
74 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
77 विधिक लेख—विधिक निर्णय
78 आर्थिक/संवैधानिक लेख—दिवाला और दिवालियापन संहिता (संशोधन) विधेयक—2017 तथा उससे जुड़े प्रमुख प्रावधान
80 चुनाव लेख—आदर्श आचार संहिता
83 सामाजिक लेख—भारतीय लोकतंत्र के संचालन में आने वाली बाधाएं
86 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग लेख—भारत-आसियान सम्बन्ध: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विवेचनात्मक अध्ययन
88 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—आर्कटिक क्षेत्र में चीन की नई योजना
90 ऐतिहासिक लेख—भारत के निर्माण में सरदार पटेल का योगदान एवं उनके विचारों की प्रासंगिकता
92 नारी जागृति लेख—महिला सशक्तिकरण : दशा और दिशा
96 शैक्षिक लेख—वैदिक शिक्षा *बनाम* आधुनिक शिक्षा
99 पर्यावरण लेख—पर्यावरणीय कानून
101 चिकित्सा लेख—जन स्वास्थ्य का बढ़ता दायरा
103 कृषि लेख—जैविक खेती को बहुराष्ट्रीय निगमों के कब्जे से बचाए रखने की चुनौती
104 सार संग्रह
108 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन—(i) आगामी सिविल सेवा एवं राज्य लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
119 (ii) बैंक ऑफ बड़ौदा प्रोबेशनरी ऑफीसर्स परीक्षा, 2017
122 (iii) दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड शारीरिक शिक्षा शिक्षक परीक्षा, 2017
128 (iv) केन्द्रीय विद्यालय संगठन प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2017
137 समसामयिक आर्थिक एवं वाणिज्यिक बहुविकल्पीय प्रश्न
139 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
141 ऐच्छिक विषय—(i) इतिहास—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2017
145 (ii) अर्थशास्त्र—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2017
149 (iii) शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2017
156 सामान्य जानकारी—भारत में कृषि क्षेत्र की स्थिति तथा वर्ष 2018-19 के लिए बजटीय प्रावधान
158 तर्कशक्ति—(i) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
161 (ii) नाबार्ड ग्रेड 'A' अधिकारी परीक्षा, 2017
163 परिमाणात्मक अभियोग्यता—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
168 क्या आप जानते हैं ?
169 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—185
172 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-467 का परिणाम
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—समय की बर्बादी चौपट भविष्य
175 खेलकूद
177 रोजगार समाचार

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

परमार्थ

✍ साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

जब एक इंसान की सम्पूर्ण योग्यता कुछ इस भाँति फलित होने लग जाए कि वह इंसान अपनी योग्यताओं से अधिकतम लोगों को लाभान्वित कर सके और वह स्वयं अपनी योग्यताओं के प्रति भी निर्लोभी हो सके तभी वह इंसान सच्चा सफल इंसान कहलाता है. यानि दो शर्तें हुईं एक तो यह कि हमारी योग्यताएं बहुत ज्यादा लोगों तक लाभ पहुँचाने वाली हों और दूसरी बात हम अपनी योग्यताओं के प्रति भी निर्लोभी हो जाएं यानी उनको प्रभावित न कर रहे हों तभी हम सफल होते हैं भला ऐसा कैसे जरा शब्द पर ध्यान दें, 'सफल' फल सहित हो जाना. एक वृक्ष फल सहित कब होता है जब वह वृक्ष अपनी उत्कृष्ट परिणति तक पहुँच जाता है. अपने सम्पूर्ण विकास को उपलब्ध होता है. तभी एक बीज विकसित पूर्ण विकसित अवस्था में फल देने वाला वृक्ष बन पाता है और जब वह वृक्ष फल देता है, तब उसके फल से उसको स्वयं को लाभ नहीं बल्कि अन्यों को लाभ पहुँचाता है. बहुतों को लाभ पहुँचाता है. किसी के लिए वह फल क्षुधापूर्ति का साधन होता है. किसी के लिए वह फल पुष्टि का साधन होता है, पोषण का साधन होता है. किसी के लिए वह फल औषधि का साधन होता है, तो किसी के लिए वही फल और अनेकों वृक्षों को जन्म देने वाले बीजों का स्थान बन जाता है और वह अपने बीजों के माध्यम से अनेक अन्य वृक्षों को पैदा करने की क्षमता रखता हुआ इस पृथ्वी पर अनेक फलों को पैदा करने वाला बन जाता है. साथ ही स्थिर अवस्था में वह फल वाला वृक्ष अपने फलों को स्वयं नहीं खाता दूसरों को देता है. अपने फलों को निष्पक्ष भाव से, निर्लोभ भाव से, आनन्द भाव से अपने से जुदा हो जाने देता है. सन्त कबीर का वचन है–

''बिरछा कबहूँ न फल भखै,
नदी न अन्चवे नीर।
परमारथ के कारने,
साधु धरा शरीर॥''

असाधारण महत्व की बात है वह अपनी योग्यताओं का भी अपने लिए कोई ऐसा स्वार्थ उपयोग नहीं करता कि जिससे वह फल दुनिया के काम न आ सके स्वयं के काम आए. वह अपने फल को दूसरों को खाने देता है, ले जाने देता है, बल्कि स्वयं ही अपने से अलग कर देता है. क्यों, क्योंकि वह जानता है कि जो पक चुका है उसको अब खुद के प्रति खुद के साथ जोड़े रखने की आवश्यकता नहीं है. पके हुए फलों को वृक्ष स्वयं ही अलग कर देता है. ठीक ऐसे ही सफल व्यक्ति अपनी योग्यताओं को फैलने देता है, जो यह जिस प्रकार से उपयोग में लेना चाहे लेने देता है. वह अपनी योग्यताओं के प्रति भी निर्लोभी, निर्मोह बनने की क्षमता रखता है और यह क्षमता ही उसे सफल बनाती है. हम अपनी जिन्दगी में उस स्तर तक सफल हो पाएं या नहीं हो पाएं जैसे एक वृक्ष फलीभूत होने पर होता है. हम हो सकते हैं बशर्ते हमारी पहली योग्यताओं का चरम विकास हो उत्कृष्ट परिणति तक हमारी योग्यताएं पहुँचें और दूसरी बात हम अपनी योग्यताओं को अधिकतम लोगों तक पहुँचाते हुए अपनी योग्यताओं के प्रति भी अहंकार मुक्त हो जाएं. मैं पने से मुक्त हो जाएं, यह मेरी है, इस भाव से भी मुक्त हो जाएं. ये मेरी क्षमता है, ये मेरी उपलब्धि है, यह मेरी योजना है, यह मेरी वजह से हुआ, इस भाव को भी जब कोई व्यक्ति तिरोहित कर चुका होता है. इस भाव से भी जब कोई व्यक्ति मुक्त हो चुका होता है तभी वह व्यक्ति सही अर्थों में सफल होता है. वरना जब तक उसके भीतर में ये मेरी योग्यता, मेरी भावना से ऐसा हुआ, मेरी योजना से ऐसा हुआ, मेरी इच्छा से ऐसा हुआ, मेरी क्षमताओं की वजह से ये उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं. जब तक ये मेरापन का मोड़ बना रहता है, तब तक वह व्यक्ति पुनः पतन का मार्ग पकड़ेगा ही. पकड़ेगा जिन पदार्थों की उपलब्धियों की वजह से वह अपने आपको आज सफल घोषित कर रहा है. कल उन पदार्थों के अभावों का दुःख उसे भोगना पड़ेगा. कल उन योजनाओं के फेल हो जाने का दुःख उसको भोगना पड़ेगा कल उसके आगे कोई और बढ़ चुका होगा और तब सम्भव है कि वह ईर्ष्या और द्वेष से भरकर उस आगे बढ़ने वाले व्यक्ति का विनाश करने के लिए कुछ षड्यंत्र करे और इस प्रकार वह अपनी योग्यताओं को गलत राह में प्रवृत्त कर दें वह कब होगा, जबकि वह अपनी योग्यताओं के प्रति निर्लोभी और निरअहंकारी न बन पाया हो ध्यान दीजिए अकसर लोग एक बार सफल होते हैं, लेकिन जिन्दगी में फिर से असफल हो जाते हैं. एक बार किसी